हन्ना अरेण्ट : ओरिजिन्स आफ टोटैलिटेरियनिज्म मे सर्वाधिकारवाद का सिद्धान्तीकरण

डॉ. शकील हुसैन

"सर्वाधिकारवाद स्वतंत्रता का सबसे कट्टरपंथी खंडन है"

हन्ना की पुस्तक ओरिजिन्स आफ टोटलिटेरिएनिज्म बीसवीं शताब्दी की सर्वाधिक महत्वपूर्ण पुस्तकों मंह से एक है क्योंकि इसने सर्वाधिकारवाद की विषद , गम्भीर, तार्किक और दार्शनिक व्याख्यि दी है । । उन्होंने जर्मनी और साम्यवादी सर्वाधिकारवाद की चर्चा की है और उसको लोकतंत्र के लिए खतरनाक बताया । शोध पत्र में यह विसर्जित करने का पत्नी किया गया है कि क्या अपनी पुस्तक में हन्ना ने सर्वाधिकारवाद का सिद्धांतिकरम किया है अर्थात के उन्होंने कोई सिद्धांत देने का प्रयत्न किया है या उनका सर्वाधिकारवाद का विश्लेषण कोई सिद्धांत है अथवा केवल एक दार्शनिक व्याख्या है जो उनके अनुभव पर आधारित है । इस दृष्टि से इस शोध पत्र का मूल आधार और संदर्भ है हन्नाह की पुस्तक ओरिजिन आफ टोटैलिटेरियनिज्म है इस पुस्तक का मूल विषय ही सर्वाधिकारवाद है किंतु उसे केंद्र में रखकर उन्होने जो विश्लेषण दिया है उससे यह स्पष्ट ध्वनित होता है कि उन्होंने सिद्धान्तीकरण की कोशिश की है। अतः उनकी पुस्तक में से सर्वाधिकारवाद को एक सिद्धांत के रूप में समझाने का प्रयत्न किया गया है ।

प्रस्तावना

अन्ना की यह पुस्तक 12 अध्याय में है । दूसरे संस्करण मे उन्होने 2 अध्याय और जोड़े । उन्होंने सर्वाधिकारवाद के पहले कुछ अन्य विषयों की भी चर्चा की है । सर्वाधिकारवाद की पूरी पृष्ठभूमि बताई है और उसके बाद सर्वाधिकारवाद की चर्चा की है । यह पुस्तक एक ही है लेकिन तीन खण्डो में है ।

प्रथम खंड में उन्होंने एंटी सेमिटिज्म उसके उद्भव और यहूदी समाज और यूरोप में यहूदी समाज के सम्मिश्रण या असिमिलेशन एवं एंटी असिमिलेशन की चर्चा की है । यहूदी समाज की कुछ विशेषताओं और बुराइयों की भी चर्चा की है ।

दूसरे खंड में उन्होंने साम्राज्यवाद की चर्चा की है । लेकिन स्पष्ट किया है कि उनका आशय साम्राज्यवादी ताकतों के यूरोपियन गतिविधि से ही है यूरोप के बाहर के साम्राज्यवाद चर्चा करना इस पुस्तक का कार्यक्षेत्र नहीं है । साम्राज्यवाद में उन्होंने प्रजाति जातीय श्रेष्ठता, नौकरशाही और पूंजी का गठजोड़ नेतृत्व और राष्ट्र की संकल्पना राष्ट्र की संकल्पना के साथ एंटी सेमिटिज्म का घालमेल या कॉमन एनिमी के द्वारा सर्वाधिकार बात को मजबूत किए जाने आदि की चर्चा की है ।

उनका उद्देश्य किसी विचारधारा का खंडन करके किसी नवीन विचारधारा स्थापित करना नहीं था । इस दृष्टि से वे दूसरे चिंतकों के मुकाबले काफी निरपेक्ष है और दूसरों से काफी आगे दिखती हैं । उन्होंने जो महसूस किया वह लिखा । यहां तक कि यहूदी होने के बाद भी उन्होंने इसराइल की विस्तारवादी और

Asst. Professor Political Science . Govt. VYT PG Autonomous college Durg Chhattisgarh. 8319735275
shakeelvns27@gmail.com

अमानवीय नीति की भी आलोचना की । हन्ना की पुस्तक आज भी सर्वाधिकारवाद पर सर्वाधिक महत्वपूर्ण दस्तावेज है । आज समकालीन विश्व में सर्वाधिकारवादी प्रवृत्तियां बहुत अधिक तेजी से फैल गई हैं । बहुत सारे देशों में तो लोकतंत्र की आड़ में भी सर्वाधिकार वादी ताकतें मजबूत हो गई हैं । शक्तियों का संकेंद्रण आजकल की शासन प्रणालियों में यहां तक कि कथित लोकतांत्रिक प्रणालियों में भी बहुत सामान्य हो गया है । छद्म शत्रु या कामन एनिमी के नाम पर सरकारें शक्तियों का संकेंद्रण कर रही हैं । मध्य एशिया, दक्षिण पूर्व एशिया, दक्षिण एशिया , लेटिन अमेरिका , अफ्रीका एशिया के अनेक विकासशील और अविकसित देश इस प्रकार के सर्वाधिकार वादी संकटों का सामना कर रहे हैं । यहां तक कि यूरोप में भी दक्षिणपंथी पार्टियां बहुत ताकतवर हो गई हैं जर्मनी और फ्रांस जैसे देश में बड़ी मुश्किल से उदारवादी दल सरकार बना पाए । अमेरिका में डोनाल्ड ट्रंप के नेतृत्व में एक नए किस्म का दक्षिण पंथ मजबूत हुआ । पहले कभी भी अमेरिका में इस तरह की विचारधारा नहीं देखी गई थी । अमेरिका के बारे में कहा जाता है कि अमेरिका में कोई सामाजिक संघर्ष नहीं है अमेरिकी संघर्ष अमेरिका की धरती के बाहर होते हैं । किंतु डोनाल्ड ट्रंप के कार्यकाल में अमेरिकी समाज का विभाजन इतनी गहराई से हो गया है कि शायद उसका समाधान होने में बहुत लंबा समय लगेगा । इसलिए हन्ना का सर्वाधिकारवाद समसामयिक विश्व में बहुत ही प्रासंगिक हो गया है । अतः हन्ना के राजनीतिक चिंतन को पुनः याद करने और स्थापित किए जाने की आवश्यकता है।

सर्वाधिकारवाद का सिद्धान्तीकरण

हन्ना ने अपनी विस्तृत किताब में केवल एक ही विषय सर्वाधिकारवाद त का विश्लेषण किया है । लेकिन उसको केंद्र में रखकर के बहुत व्यापक विश्लेषण उन्होने किया है उन्होंने सीधे–सीधे तो सिद्धांत का प्रणयन नहीं किया लेकिन जिस तरीके से उन्होंने सर्वाधिकारवाद के चारों तरफ अपने तर्क को बुना है उससे स्पष्ट रूप से हन्ना का सर्वाधिकारवादी विश्लेषण 20वीं शताब्दी के एक महत्वपूर्ण राजनीतिक सिद्धांत के रूप में सामने आता है ।

उनके विश्लेषण के कुछ अभिग्रह है जिन्हें उनके सर्वाधिकारवादी सिद्धांत के क्रमिक तर्क के रूप में लिया जा सकता है अर्थात उन्होंने सर्वाधिकारवाद के विश्लेषण के लिए निम्न क्रम में अपने तर्क विकसित किया है।

- औद्योगिक क्रांति से उत्पन्न नवधनाड्य वर्ग या उस समय की शब्दावली में बुर्जुआ ।
- बुर्जुआ को धन और उद्योगों के विकास के लिए संरक्षण देने वाला सम्प्रभु राष्ट्रराज्य ।
- बुर्जुआ के एकाधिकारवादी संरक्षण के लिए भेदभाव के आधारो के रूप मे इतिहासवाद और एण्टीसेमेटिज्म की तलाश ।
- एण्टीसेमेटिज्म की नीव पर सर्वाधिकारवाद की स्थापना
- सर्वाधिकारवाद का वैश्विक फैलाव साम्राज्यवाद ।

राष्ट्रवाद

राष्ट्रवाद की अवधारणा पर एंटीसेमिटिज्म खड़ा किया जाता है क्योंकि यह होता है जिसके आधार पर एंटी सेमिटिज्म की भावना का प्रचार होता है जबकि वास्तविक राष्ट्रवाद तो राष्ट्र राज्य के समय में थे उन्होंने लिखा है कि यह स्पष्ट रूप से देखा गया है कि नाजी वादियों के राष्ट्रवादी आंदोलन वास्तव में राष्ट्रवादी नहीं थे ।

यह बात काफी हद तक उचित थी कि राजनेता, जो मुख्य रूप से स्थापित राष्ट्रीय क्षेत्र के संदर्भ में सोचते थे, वे सहज ज्ञान से जानते थे कि यह नया विस्तार आंदोलन, जिसमें ''देशभक्ति ... सबसे अच्छी तरह से पैसा बनाने में व्यक्त की जाती है'' (ह्यूबे–श्लेडेन) और राष्ट्रीय ध्वज एक ''व्यावसायिक संपत्ति'' (रोड्स) है । " (हन्नाह : 1951पृ 125)

एण्टीसेमेटिज्म

हन्ना ने एंटीसेमिटिज्म को तत्कालीन यूरोप के यहूदी विरोधी आंदोलन के रूप में व्यक्त किया है लेकिन उन्होंने एंटीसेमिटिज्म के संदर्भ में जो बातें लिखी हैं और जिस प्रकार एंटीसेमिटिज्म का यूरोप में विकास हुआ और जो कारण उसके लिए महत्वपूर्ण थे उनमें से अधिकांश कारण लगभग अधिकांश सर्वाधिकारवादी शासनो में सर्वाधिकारवाद के बढ़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं । मौजूदा समय में भी यदि विश्व की सर्वाधिक लोकतांत्रिक शासन व्यवस्थाओं का विश्लेषण किया जाए तो एंटीसेमिटिज्म कि यह प्रवृत्तियां उनमें भी दिखाई देती हैं । यह अलग बात है कि इन सर्वाधिकारवादी शासकों में एंटीसेमिटिज्म में नफरत के पात्र अलग–अलग हैं या उनके कुछ दूसरे नाम है ।
सामाजिक एकीकरण का अभाव
अलगाव की राजनीति
नफरत का प्रचार
नफरत के लिए इतिहास का प्रयोग
तथ्यों की मनमानी व्याख्या, यह सब कुछ एंटीसेमिटिज्म के लिए जिम्मेदार था और समकालीन सर्वाधिकारवादी शासन में भी इस प्रकार की प्रवृतियां साथ–साथ देखी जा सकती हैं इस संबंध में हन्ना के कुछ कथन बहुत ही महत्वपूर्ण है जो उन्हें एंटीसेमिटिज्म और उसके विकास के संबंध में लिखे हैं।
हन्ना के अनुसार एंटीसेमिटिज्म यूरोप में नया नहीं था बल्कि इसकी जड़ें बहुत पुरानी थी 16 वी 17 वी 18वी,19वी सदी सभी शताब्दियों में एंटीसेमिटिज्म किसी न किसी रूप में गंभीर रूप से विद्यमान था । उन्होंने 1894 के ड्रेफस अफेयर अर्थात फ्रांस के फौजी अफसर अलफ्रेड ड्रेफूस की गिरफ्तारी और रिहाई की घटना का उल्लेख किया है । अल्फ्रेड रेफर्स यहूदी मूल का फ्रांसीसी सैनिक अफसर था जिसने एंटीसेमिटिज्म के खिलाफ आवाज उठाई थी और उसे गिरफ्तार कर लिया गया था । लेकिन क्योंकि फ्रांस में उस समय रिपब्लिक थी इसलिए उसके समर्थन में आवाजें उठी और 1909 में उसे रिहा करना पड़ा ।

हन्ना यह बताने की कोशिश करती हैं कि इटली और जर्मनी में एंटीसेमिटिज्म इसलिए बुरा और खतरनाक साबित हुआ क्योंकि सर्वाधिकारवादी शासकों ने अर्थात हिटलर और मुसोलिनी ने एंटीसेमिटिज्म को एक संस्थागत रूप दे दिया और उसे एक सामाजिक अवधारणा बना दिया । यह धारणा झूठे प्रचार के द्वारा समाज में एक तथ्य एवं सत्य के रूप में स्थापित कर दी गई जिसका दुष्परिणाम यह हुआ कि पूरा समाज ही यहूदियों के खिलाफ खड़ा हो गया । दूसरे शब्दों में एंटी सेमिटिज्म की भावना ने जर्मनी के समाज का इतना सांप्रदायिक करण कर दिया कि जिससे लोग अपने पड़ोसी यहूदियो के दुश्मन हो जाएं और यहूदियो पर सरकारी अत्याचार को वो बुरा न समझे और यहूदियो से कोई सहानुभूति न रहे । जिसका दुष्परिणाम यहूदियों के नरसंहार और यहूदियों के पलायन के रूप में हुआ ।
"दुर्भाग्यपूर्ण कैप्टन ड्रेफस के मामले ने दुनिया को दिखा दिया था कि प्रत्येक यहूदी कुलीन और करोड़पति में अभी भी कुछ न कुछ पुराने जमाने का बहिष्कृत व्यक्ति मौजूद है, जिसका कोई देश नहीं है, जिसके लिए मानवाधिकार मौजूद नहीं हैं और जिसे समाज अपने विशेषाधिकारों से खुशी–खुशी वंचित कर देगा।" (हन्नाह :1951 पृ 117)

समुदायो की समरसता व सामाजिक राजनीतिक सक्रीयता आवश्यक है ।

हन्ना यूनानियों के सामाजिक और सामुदायिक गतिशीलता से बहुत अधिक प्रभावित थी और उनकी मान्यता थी कि समाज के संपूर्ण आबादी को सामाजिक और राजनीतिक गतिविधियों में सक्रिय रहना चाहिए तभी सक्रिय नागरिकता विकसित हो सकती है । सक्रिय नागरिकता के अभाव में सत्ता का संकेंद्रण होता है और तानाशाही संरचनाओं विकसित होती हैं सर्वाधिकारवाद के विकास का एक कारण यह भी है की नागरिकता की भावना का प्रसार अधिक नहीं था और यहूदियों में राजनीतिक सक्रियता नागरिक सक्रियता नहीं थी । वे केवल व्यावसाय तक सीमित थे।हन्ना यहूदियों को शिक्षा देती हुई दिखाई देती हैं जब वह यह कहती हैं कि उन्हें सामाजिक राजनीतिक गतिविधियों में सक्रिय रूप से भागीदारी करनी चाहिए ।

"यहूदी–विरोधी भावना तब चरम पर पहुँच गई जब लोगों ने भी अपने सार्वजनिक कार्य और प्रभाव खो दिए और उनके पास सिर्फ अपनी दौलत बची। जबहिटलर सत्ता में आया तो जर्मन बैंक लगभग जुडेनरेन थे। (हन्नाह : पृ 04) "

एंटीसेमिटिज्म के जन्म और विकास में का संबंध यहूदियों के सामाजिक एकीकरण या सम्मिश्रण समाज के धर्मनिरपेक्ष स्वरूप और यहूदियों के धार्मिक मान्यताओं के विस्थापन के साथ ही जुड़ा हुआ है ।

सर्वाधिकारवाद का जनतंत्रीय आधार

हन्ना सेमिटिज्म के विकास के लिए राष्ट्र राज्य के पतन को जवाबदेही मानती थी । उनकी दृष्टि में राष्ट्र राज्य के पतन ने एंटीसेमिटिज्म के विकास में भूमिका निभाई ।

उनके अनुसार पूंजावादी लोकतांत्रिक प्रतिनिधि प्रणाली सर्वाधिकारवाद के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं , यदि समाज में राजनीतिक भागीदारी कम हो, सामाजिक उथल–पुथल हो, और सरकारे ठीक से काम ना करती हों तो यह बहुत आसान हो जाता है कि किसी करिश्माई नेतृत्व के चारों ओर सत्ता का संकेंद्रण हो जाए । जिससे सर्वाधिकारवाद विकसित होता है । सत्ता के संकेंद्रण के लिए किसी छद्म में शत्रु या कामन एनीमी की आवश्यकता होती है और यह छद्म शत्रु आसानी से एंटीसेमैटिज्म के रूप में यूरोप में प्राप्त हो जाता है अतः हन्ना यह बताने की कोशिश करती हैं कि यूरोप में एंटी सेमेमिटिज्म के प्रसार और विकास में लोकतंत्र के प्रसार की भी महत्वपूर्ण भूमिका थी ।

"ऑस्ट्रियन एंटीसेमिटिज्म किसी मैटरनिख या सेंट जोसेफ के नेतृत्व में नहीं आया था बल्कि युद्ध के बाद गणतंत्र सरकार के द्वारा लाया गया था " (हन्नाह पृ 5)

प्राचीन अत्याचारी तंत्र और सामयिक सर्वाधिकारवाद मे अंतर

हन्ना के अनुसार सर्वाधिकारवाद को केवल तानाशाही समझना या सत्ता का संकेंद्रण समझना भूल होगी । प्राचीन काल में भी अत्याचारी शासन होता था लुई के शासन को फ्रांस में कौन भूल सकता है । लेकिन प्राचीन अत्याचारी सम्राटों और आधुनिक सर्वाधिकारवाद में मौलिक अंतर है । आज शासन का आधार बड़ा है अर्थात इसमें जनता की प्रत्यक्ष भूमिका होती है । अतः सत्ता का स्वरूप चाहे जो भी हो यदि यह सर्वाधिकारवादी है तब भी उसका आधार वैसा ही बड़ा रहता है अर्थात उसमें भी जनता की भागीदारी रहती है । इसलिए आधुनिक सर्वाधिकारवाद केवल अपने विरोधियों को समाप्त कर सत्ता को मजबूत करने का उपकरण नहीं है बल्कि एक आज्ञाकारी समाज बनाने का उपकरण है । जिसमें जन समूह को एक स्थाई समर्थक समूह में परिवर्तित किया जाता है । जो सर्वाधिकारवाद को वैध बनाता है ।

"आधुनिक तानाशाही और अतीत की सभी अन्य तानाशाहियों के बीच एक बुनियादी अंतर यह है कि आतंक का इस्तेमाल अब विरोधियों को खत्म करने और डराने के साधन के रूप में नहीं किया जाता है, बल्कि

लोगों की भीड़ पर शासन करने के साधन के रूप में किया जाता है जो पूरी तरह से आज्ञाकारी हैं। ” (हन्नाह पृ 06)

सर्वाधिकारवाद का निर्माण : प्रचार और भय

हन्ना के अनुसार सर्वाधिकारवाद को सुविचारित तरीके से विकसित किया जाता है उसके पीछे धन साधन और बुद्धि का प्रयोग किया जाता है और एक पूरी योजना के तहत इसको प्रचारित प्रसारित और स्थापित किया जाता है । जिसके लिए तथ्यों के मनमाने प्रयोग और इतिहास की मनमानी व्याख्या की जाती है ।

मिथ्या प्रचार का महत्व

जिस प्रकार से झूठ का सहारा लेकर तत्कालीन जर्मनी में एंटीसेमिटिज्म को बढ़ावा दिया जा रहा था उसका वर्णन उन्होंने ग्रीक दर्शन में प्लेटो की पुस्तक के उदाहरणों से किया है । उन्होंने यह बताया कि प्लेटो ने भी इस बात की चर्चा की है कि किसी बात के को सही साबित करने के लिए उसका दोहराया जाना जरूरी है न कि उसका सत्य होना । सत्य या ज्ञान एक अलग वस्तु है जो धारणा से भिन्न है । धारणा और ज्ञान में अंतर होता है धारणा को यदि बार–बार दोहराया जाए खुद तो उसे सत्य के रूप में स्थापित किया जा सकता है ।

हन्ना के शब्दों में

” प्लेटो ने प्राचीन सोफिस्टों के खिलाफ अपनी प्रसिद्ध लड़ाई में पाया कि उनकी ‘‘तर्कों से मन को मंत्रमुग्ध करने की सार्वभौमिक कला’’ (फादरस 261) का सच्चाई से कोई लेना–देना नहीं था, बल्कि उन विचारों के उद्देश्य से था, जो उनके द्वारा ही प्रकृति बदल रही है, और जो केवल ‘‘समझौते के समय और जब तक समझौता रहता है’’ (थियेटेटस 172) मान्य हैं। उन्होंने खोज भी की। दुनिया में सच्चाई की बहुत असुरक्षित स्थिति, क्योंकि ‘‘राय आती है’’ अनुनय और सत्य से नहीं’’ (फादरस 260। प्राचीन और आधुनिक सोफिस्टों के बीच सबसे महत्वपूर्ण अंतर यह है कि पूर्वज सत्य की कीमत पर तर्क की एक गुजरती जीत से संतुष्ट थे,जबकि आधुनिक लोग वास्तविकता की कीमत पर अधिक स्थायी जीत चाहते हैं।

दूसरे शब्दों में, एक ने मानवीय विचार की गरिमा को नष्ट किया जबकि दूसरे ने मानवीय कार्यों की गरिमा को नष्ट किया। तर्क के पुराने जोड़–तोड़ दार्शनिक के सरोकार थे, जबकि तथ्यों के आधुनिक जोड़–तोड़ इतिहासकार के रास्ते में आड़े आते हैं। क्योंकि इतिहास स्वयं नष्ट हो गया है, और इसकी बोधगम्यता–इस तथ्य पर आधारित है कि इसे पुरुषों द्वारा अधिनियमित किया गया है और इसलिए पुरुषों द्वारा समझा जा सकता है–खतरे में है, जब भी तथ्यों को अतीत और वर्तमान दुनिया का हिस्सा और पार्सल नहीं माना जाता है, और इस या उस राय को साबित करने के लिए दुरुपयोग किया जाता है। ” (हन्नाह पृ.09)

साम्राज्यवाद और बुर्जुआ

हन्ना ने तत्कालीन उद्योगपतियों और पूंजीवाद को परिभाषित करने के लिए साम्यवादी शब्दावली बुर्जुआ का इस्तेमाल किया है उनकी लिस्ट में साम्राज्यवाद वस्तुतः सरकारों का नहीं बल्कि बुर्जुआ वर्ग का षड्यंत्र था वो लिखती हैं कि साम्राज्यवाद का जन्म कब हुआ जब सत्ताधारी वर्ग में पूंजीवादी वर्ग यह मानने लगा कि अब उत्पादन की सीमा है राष्ट्रीय सीमाओं के बाहर जाने चाहिए और तभी बुर्जुआ वर्ग आर्थिक वर्ग से राजनीतिक वर्ग बन गया . विस्तार के लिए विस्तार के वास्ते विस्तार के नारे के साथ बुर्जुआ वर्ग ने अपने राष्ट्रीय सरकारो को विश्वराजनीति के रास्ते पर जाने के लिए तैयार कर लिया । (हन्नाह पृ 126)

हन्ना के अनुसार 19वीं शताब्दी का साम्राज्यवाद 1520 16वीं शताब्दी के साम्राज्यवाद से पूरी तरह अलग था 15 वी सोलहवी शताब्दी का साम्राज्यवाद मूलतः साम्राज्यवाद था जो क्षेत्रों पर अधिकार करने के लिए या राज्य की सीमा का विस्तार करने के लिए किया गया था किंतु 19वी शताब्दी का साम्राज्यवाद पूंजी के विस्तार का साम्राज्यवाद है ना कि क्षेत्र के विस्तार का साम्राज्यवाद । इसलिए इतिहासकार इस बात की गलती करते हैं और यह शायद यह गलती जानबूझकर करते हैं कि वह साम्राज्यवाद और कॉमनवेल्थ को एक कर देते हैं ।

"आधुनिक ऐतिहासिक शब्दावली का बेतहाशा भ्रम इन असमानताओं का ही एक उपोत्पाद है। प्राचीन साम्राज्यों से तुलना करके, " (हन्नाह पृष्ठ 131)

19वीं शताब्दी का साम्राज्यवाद कॉमनवेल्थ है अर्थात उपनिवेशवाद से संपत्ति को लूट कर औपनिवेशिक देशो की संपत्ति को कॉमनवेल्थ बनाने की कोशिश है जिसमें पूंजीवादी ताकतें कामयाब रही हैं ।

प्रारंभिक पूंजीवादी साम्राज्यवाद के निर्यात में यहूदियों का भी गंभीर योगदान था वह बताती हैं और इसके लिए उन्होंने प्रसिद्ध ब्रिटिश इतिहासकार हाब्सन को उद्धृत किया है कि किस प्रकार प्रारंभिक साम्राज्यवाद में यहूदी पूंजीपतियों ने पैसे लगाए और भारी मात्रा में यूरोप के बाहर व्यापारिक कंपनियों को लोन दिया । यह लोन निश्चित तौर पर लाभ के लिए था लेकिन जो संरक्षा और सुरक्षा यूरोपीय पूंजी पतियों को सरकार से प्राप्त होती थी वह सुरक्षा यहूदी पूंजी को नहीं प्राप्त हुई । यहूदी यहां पर चूक गए कि उन्होंने सरकारों में अपनी जगह नहीं बनाई । हाब्सन को उन्होंने उदित करते हुए लिखा है कि किस प्रकार दक्षिण अफ्रीका में यहूदी पूंजी का निर्यात हुआ और यहूदियों ने सरकारों को फाइनेंस किया ।

इस संबंध में जे ए हॉब्सन ने पहले निबंध में जो उन्होंने इस विषय पर लिखा, ''दक्षिण अफ्रीका में पूंजीवाद और साम्राज्यवाद'' (समकालीन में)समीक्षा, 1900), उन्होंने कहाः ''अधिकांश (वित्तपोषक) यहूदी थे, क्योंकि यहूदी अंतरराष्ट्रीय फाइनेंसरों में उत्कृष्टत थे अंग्रेजी बोलने वाले थे और उनमें से अधिकांश महाद्वीपीय मूल के हैं ... वे पैसे के लिए वहां (ट्रांसवाल) गए थे, और वे जो जल्दी आ गए और अधिकांश जो बना सके, उन्होंने अपने लोगों को वापस बुला लिया ।

निष्कर्ष

हन्नाह का विश्लेषण सिद्धांतिकरण का प्रयास नहीं है लेकिन उन्होंने जिस प्रकार से अपना दर्शन विकसित किया है और कार्ल मार्क्स की भांति उसकी ऐतिहासिक व्याख्या की है और जिस तरीके से अपने तर्कों का विकास किया है से उनका यह सिद्धांत निश्चित रूप से विश्व शताब्दी में राजनीति विज्ञान का एक बेहद महत्वपूर्ण सिद्धांत बन जाता है । सर्वाधिकवाद के संबंध में उनके कई कथन इतने समीचीन और प्रासंगिक हैं कि यदि उनके साथ हन्ना का नाम ना लगाया जाए तो वह आज विकासशील दुनिया के कई देशों के संदर्भ में और यहां तक की चीन और रूस जैसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाले देशों के संबंध में यथावत लागू होते हैं । जैसे उन्होंने सर्वाधिकारवादी शासन की विशेषता बताते हुए कहा कि उसमें सत्ता का संकेंद्रण होता है किंतु पद सोपान की कोई पिरामिड आकार संरचना नहीं होती । पद सोपान का पिरामिड दिखता तो है लेकिन होता नहीं है । अर्थात अधिकार केवल सत्ताधारी के पास होते हैं उनके प्रवाह की केवल औपचारिक व्यवस्था होती है असल में कोई प्रवाह नहीं होता , बल्कि केवल आदेशों का प्रवाह होता है । सरकारी संस्थाएं बहुत मजबूत दिखाई देती हैं लेकिन वह होती नहीं और जो मजबूत संस्थाएं होती है वह दिखाई नहीं देती ।

"एकमात्र नियम जिसके बारे में अधिनायकवादी राज्य में हर कोई सुनिश्चित हो सकता है, वह यह है कि सरकारी एजेंसियाँ जितनी अधिक दृश्यमान होंगी, उनकी शक्ति उतनी ही कम होगी, और किसी संस्था के अस्तित्व के बारे में जितना कम जाना जाएगा, वह अंततः उतनी ही अधिक शक्तिशाली होगी। "(हन्नाह पृष्ठ 406) लेकिन हन्नाह निराशावादी नहीं है । वे मार्क्स के अंतर्विरोध के सिद्धांत में भरोसा करती हैं और यह मानती है की सर्वाधिकारवाद में ही मौलिक रूप से उसके नष्ट होने की भी निशानियां होती है । क्योंकि

उसमें सत्ता का संकेंद्रण होता रहता है और वह अपने चरम में इस स्थिति में पहुंच जाता है कि किसी पर विश्वास नहीं करता और सत्ता के संकेंद्रन के दुष्प्रभावों को भी देख नहीं पता और अंततः नष्ट हो जाता है।

"अधिनायकवादी शासनों के साथ समस्या यह नहीं है कि वे सत्ता की राजनीति को विशेष रूप से निर्दयी तरीके से खेलते हैं, बल्कि यह है कि उनकी राजनीति के पीछे सत्ता की एक पूरी तरह से नई और अभूतपूर्व अवधारणा छिपी हुई है, ठीक उसी तरह जैसे उनकी वास्तविक राजनीति के पीछे वास्तविकता की एक पूरी तरह से नई और अभूतपूर्व अवधारणा छिपी हुई है, दुष्परिणामों के प्रति परम उपेक्षा।" (हन्नाह पृष्ठ 417)

संदर्भ

हन्नाह अरेण्ड्ट : (1951) *द ओरिजिन्स आफ टोटैलिटैरियनिज्म* न्यूयार्क ।